उत्तराखण्ड में पुरुष प्रवास का स्त्रियों पर प्रभाव

प्रताप सिंह गढ़िया

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
सेक्टर ओ, अलीगंज हाउसिंग स्कीम
लखनऊ-226 024

1998

उत्तराखण्ड में पुरुष प्रवास का स्त्रियों पर प्रभाव

प्रताप सिंह गढ़िया

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
सेक्टर ओ, अलीगंज हाउसिंग स्कीम
लखनऊ-226 024

1998

उत्तराखण्ड में पुरूष प्रवास का स्त्रियों पर प्रभाव

डॉ० प्रताप सिंह गढ़िया

साधारणतया आर्थिक रूप से गरीब ग्रामीण पुरूष वर्ग द्वारा रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने का क्रम शहरों के उद्भव से ही चला आया है और अपने प्रवास वाले स्थान से धनादेश भेजकर पारिवारिक आय में वृद्धि करने व परिवार के भरण-पोषण में सहयोग देने की प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही रही है लेकिन जहां एक ओर प्रवासी सदस्य द्वारा भेजे गये धनादेश से पारिवारिक आय में वृद्धि होती है वहीं दूसरी ओर परिवार के पुरूष सदस्य द्वारा प्रवास करने पर परिवार का सम्पूर्ण कार्यभार स्त्री सदस्यों के कन्धों पर आ जाता है। उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचल जहां की भौगोलिक सामाजिक व आर्थिक स्थितियां देश व प्रदेश के अन्य भागों से भिन्न है और स्त्रियों का योगदान कृषि, पशुपालन व अन्य घरेलू कार्यों में पुरूष वर्ग से अधिक है वहां यदि परिवार का पुरूष सदस्य पलायन करता है तो उनका सामाजिक जीवन किस रूप से प्रभावित होता है को स्त्रियों द्वारा स्वंय दिये गये उत्तरों से इस बात को परखने का प्रयास इस लेख में किया गया है।

प्रस्तुत लेख हमने जो उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचल के स्त्रियों की भूमिका व समस्याओं पर शोध किया है के आधार पर निरूपित किया गया है। सन् १९९४-९५ में किये गये इस अध्ययन का क्षेत्र जनपद अल्मोड़ा के गडेरा, ऐठान व लीली तथा चमोली जनपद के पैठाणी, चौण्डा व तुगेश्वर गांव है। अध्ययन प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है और उत्तरदाता के चयन के लिए भूमि जोत को आधार बनाया गया है।

चयनित परिवारों में प्रवास की स्थिति

प्रवासी सदस्यों के प्रवास की विशेषताए, प्रवास का उद्देश्य व प्रवास करने से स्त्रियों के सामाजिक जीवन में पड़ने वाले प्रभाव को जानने से पूर्व कोई क्यों प्रवास करता है ? इस सम्बन्ध में जानना भी आवश्यक है। पर्वतीय क्षेत्र में प्रवास के सम्बन्ध ा में पन्त (१९३५) ने लिखा है कि नवम्बर से मार्च के बीच में पहाड़ों में कंपाने वाली ठण्ड व बर्फ गिरती है जिसमें सभी प्रकार की घास नष्ट हो जाती है जिस कारण जानवरों को पालना दुष्कर हो जाता है। इसके अलावा कृषि में जाड़ों के महीनों में कोई काम नहीं करना पड़ता है, तब पहाड़ का प्रत्येक व्यक्ति रोजगार की खोज करता है। साल के उपरोक्त महीनों में रोजगार में न लगे होने के कारण लोग तुलनात्मक रूप से गरीब होते हैं जबकि अत्यधिक ठण्डक के कारण इस दौरान रहन-सहन की लागत बढ़ जाती है इसलिए इन समस्याओं का सामाधान करने के लिए पर्वतीय क्षेत्र का आदमी खाने की तलाश के साथ-साथ धूप की खोज में भी रहता है। अतः पर्वतीय क्षेत्र का आदमी कुछ व्यापार व लाभदायक रोजगार की तलाश में तराई व भावर के क्षेत्रों में प्रवास करते हैं।

शाह (१९८६) ने पर्वतीय क्षेत्र से प्रवास करने के कारणों के सम्बन्ध में लिखा है कि निम्न आय, अपर्याप्त रोजगार के अवसर, कृषि की न्यून उत्पादकता और पर्वतीय क्षेत्र के कम विकसित होने के कारण क्षेत्र की जनता को देश के शहरीय व मैदानी भागों में प्रवास करना पड़ता है। पिछड़े व सीमान्त क्षेत्रों में खाद्यान का न पहुंच पाना तथा जनसंख्या के बढ़ते दबाव

के कारण भी लोग खाद्यान व रोजगार की खोज में बड़े पैमाने पर प्रवास करने के लिए विवश होते हैं।

सिंह (१९७७) ने भी प्रवास करने के कारण के सम्बन्ध में लिखा है कि पुरानी कृषि पद्धति व सीढ़ीनुमा खेत, सिंचाई के साधनों की कमी व छोटी-छोटी व बिखरी जोतें, न्यून उत्पादकता, खराब मौसम व भौगोलिक स्थिति के कारण कृषि में अधिक उत्पादन वाले साधनों का प्रयोग न कर पाने के कारण पर्वतीय क्षेत्र के लोग प्रवास करने को प्रोत्साहित होते हैं। जहां विभिन्न समाजशास्त्रियों ने प्रवास के अनेक कारणों से अवगत कराया है वहीं दूसरी तरफ प्रवास में मुख्य भागीदार पुरूष सदस्यों की रही है। इस सम्बन्ध में येन (१९७१) लिखते हैं कि बहुत सारे अध्ययन जो कि विश्व के तीसरे देशों में किये गये हैं इस बात की पुष्टि करते हैं कि एशिया में पुरूष प्रवास की प्रधानता है, यद्यपि भौगोलिक दृष्टि से उनमें विषमता है। स्त्रियाँ साधारणतया पुरूष सदस्य की सफलता पर उनके साथ प्रवास करती हैं। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए खनका (१९८५) ने लिखा है कि कुमायूं क्षेत्र से प्रवास करने वाले सदस्यों की एक खास विशेषता यह है कि पुरूष सदस्य एक व्यक्ति के तौर पर प्रवास करते हैं जो अर्द्धस्थायी प्रकृति का होता है।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि पर्वतीय क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक अवस्थापनाओं की न्यूनता, आर्थिक अवसरों की कमी, न्यून मजदूरी दरें, पढ़े लिखे लोगों के लिए रोजगार के अवसर न होना, पेयजल समस्या, विद्युत समस्या, चारा व ईधन को जमा करने की समस्या, निम्न आर्थिक स्तर, शहरी चमक-दमक की ओर आर्कषण तथा खाद्यानों की आपूर्ति ठीक से न हो पाने के कारण पर्वतीय क्षेत्र के नवयुवक प्रवास करने को विवश है। यद्यपि प्रवासी सदस्य प्रवास करने के बाद अपने परिवार से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये रखता है क्योंकि पर्वतीय क्षेत्र की संस्कृति, रीति-रिवाज, मेले तथा त्योहार प्रवासी सदस्यों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

प्रवास का स्थान व दर

तालिका संख्या १ में प्रति परिवार पुरूष प्रवास, दर एवं प्रवास के स्थान का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि हमारे चयनित परिवारों के लगभग ९५.० प्रतिशत लोगों ने शहरीय क्षेत्रों में तथा ५.० प्रतिशत लोगों ने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास किया है। यद्यपि ग्रामीण प्रवासी सदस्य गांवों में ही प्रवास को महत्व देते हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की अनुलब्धता के कारण शहरीय व मैदानी क्षेत्रों में प्रवास कर रहे हैं। भूमि जोत के आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि मध्यम जोत (५.० एकड़ से अधिक) आकार के कृषक परिवार के सदस्य सामाजिक प्रभाव होने के कारण अध्यापक की नौकरी में जाते हैं ताकि नजदीक के गांवों में प्रवास होने से अवकाश के दिनों में कृषि कार्यों में हाथ बंटा सके। प्रति परिवार औसत प्रवास को देखने से ज्ञात होता है कि हमारे प्रतिवर्ष में १.७ व्यक्ति प्रति परिवार प्रवास किये है। भूमि जोत के अनुसार १.० एकड़ से कम जोत आकार के कृषक परिवारों में प्रति परिवार प्रवास तुलनात्मक रूप से अधिक देखा गया है जो उनकी गरीबी व पिछड़ेपन की ओर स्पष्ट संकेत करता है। प्रवासी सदस्य मात्र पुरूष होने के कारण इस अध्ययन में कुल पुरूष जनसंख्या से प्रवासी पुरूषों के दर को दर्शाया गया है। साधारणतया भूमि जोत के सभी वर्गों में प्रवास दर अधिक है लेकिन तुलनात्मक रूप में मध्यम जोत (५.० एकड़ से अधिक) में प्रवास दर अन्य छोटे जोतों से कम देखी गयी है।

तालिका संख्या १

प्रवास स्थान एवं प्रवास दर के अनुसार प्रवासी सदस्यों का वितरण

भूमि जोत आकार (एकड़ में)	शहरीय	ग्रामीण	कुल	प्रति परिवार औसत प्रवास	प्रवास दर
१.० से कम	४९ (९८.०)	१ (२.०)	५० (१००.०)	२.०	२२.५
१.०-२.५	३४ (९७.१)	१ (२.९)	३५ (१००.०)	१.६	२५.४
२.५-५.०	१३ (९२.८)	१ (७.२)	१४ (१००.०)	१.५	२५.९
५.० +	१ (३३.३)	२ (६६.७)	३ (१००.०)	१.६	२३.१
कुल	९७ ९५.१	५ ४.९	१०२ (१००.०)	१.७	२३.८

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

प्रवास का उद्देश्य

पर्वतीय क्षेत्र में प्रवास का मुख्य उद्देश्य आर्थिक रहा है। हमारे प्रतिवर्ष परिवारों के ९१.२ प्रतिशत प्रवासी सदस्यों का भी मुख्य उद्देश्य नौकरी करना रहा है। जबकि मात्र ८.८ प्रतिशत सदस्य अध्ययन के लिए प्रवास किये हैं। भूमि जोत के आधार पर देखने से ज्ञात होता है कि ७.१ प्रतिशत सीमान्त जोत (२.५ एकड़ से कम) व २१.४ प्रतिशत लघु जोत (२.५-५.० एकड़) के परिवारों के सदस्य अध्ययन के लिए प्रवास किये हैं जबकि मध्यम (५.० एकड़ से अधिक) जोत वाले परिवार के शत-प्रतिशत सदस्य नौकरी के लिए प्रवास किये हैं।

तालिका संख्या २

परिवार के सदस्यों के प्रवास का उद्देश्य

भूमि जोत आकार (एकड़ में)	अध्ययन	नौकरी	कुल
१.० से कम	४ (८.०)	४६ (९२.०)	५० (१००.०)
१.०-२.५	२ (५.७)	३३ (९४.३)	३५ (१००.०)
२.५-५.०	३ (२१.४)	११ (७८.६)	१४ (१००.०)
५.० +	-	३ (१००.०)	३ (१००.०)
कुल	९ (८.८)	९३ (९१.२)	१०२ (१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

प्रवासी सदस्य के प्रवास के स्थान पर रोजगार का विवरण

पर्वतीय क्षेत्र के नवयुवकों द्वारा भारतीय सेना की नौकरी में प्रवास करने के सम्बन्ध में वसेड़ा (१९९२) ने लिखा है कि स्वाधीनता से पूर्व पर्वतीय क्षेत्र में यदि कोई व्यवसाय था तो वह सेना में भर्ती होना था। वहां की समृद्धि केवल मनीआर्डर पर ही निर्भर थी। इसके फलस्वरूप सेना में भर्ती होना एक परम्परा बन गयी जो अब भी चल रही है। चूंकि पर्वतीय क्षेत्र के लोग शौर्य व अनुशासन के उदाहरण रहे है इसी कारण ब्रिटिश सरकार ने प्रथम युद्ध के आस-पास गढ़वाल राईफल्स व कुमायूं रेजीमेंट की स्थापना इस क्षेत्र में कर दी जिससे वहां के लोग भारतीय सेना के विभिन्न अंगों में व अर्द्धसैनिक बलों में काफी संख्या में भर्ती होते हैं।

यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि पर्वतीय क्षेत्र के ६०-७० प्रतिशत नवयुवक अभी भी भारतीय सेना व अर्द्धसैनिक बलों में भर्ती होते हैं। हमारे चयनित गांवों के परिवारों के ४०.२ प्रतिशत प्रवासी सदस्य भी सेना में कार्यरत हैं। शिक्षा का विकास व अन्य सरकारी विभागों में नौकरियों की उपलब्धता के कारण ४२.२ प्रतिशत अन्य सरकारी नौकरी में पाये गये। विद्यालयों में फेल होकर घर से भागने वाले बच्चे व प्रवासी सदस्यों के घर आने पर उनकी चमक-दमक को देखकर पर्वतीय क्षेत्र के

नवयुवक पलायन करते हैं। शिक्षा व प्रशिक्षण का आभाव होने के कारण इस प्रकार के नवयुवक घरेलू नौकर, भोजनालयों में बर्तन मांजने व छोटी-छोटी फैक्टरी में कार्य करने को बाध्य होते हैं। हमारे प्रवासी परिवारों के ५.९ प्रतिशत सदस्य इस प्रकार के रोजगार में पाये गये हैं। जबकि २.९ प्रतिशत सदस्य स्वरोजगार में पाये गये।

तालिका संख्या -३

प्रवासी सदस्यों के रोजगार का विवरण

भूमि जोत	फौज में	अन्य सरकारी नौकरी	स्वरोजगार	निजी संस्थाओं में कार्य	अन्य	कुल
१.० एकड़ से कम	२६ (५२.०)	१८ (३६.०)	१ (२.०)	१ (२.०)	४ (८.०)	५० (१००.०)
१.०-२.५	९ (२५.७)	१९ (५४.३)	२ (५.७)	३ (८.६)	२ (५.७)	३५ (१००.०)
२.५-५.०	५ (३५.७)	४ (२८.६)	-	२ (१४.३)	३ (२१.४)	१४ (१००.०)
५.० +	१ (३३.३)	२ (६६.७)	-	-	-	३ (१००.०)
कुल	४१ (४०.२)	४३ (४२.२)	३ (२.९)	६ (५.९)	९ (८.८)	१०२ (१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

प्रवासी सदस्यों के घर आने का समय

अपनी सामाजिक व धार्मिक परम्पराओं, भावनाओं, रीति रिवाजों व मेले त्योहारों के समय में प्रवासी सदस्य साधारणतया घर आया करते थे लेकिन वर्तमान में ज्यों-ज्यों मदिरा पान की प्रवृति बढ़ती गयी तो मेलों व धार्मिक उत्सवों में विकृति आने लगी है। चयनित परिवारों के मात्र २.९ प्रतिशत प्रवासी सदस्य अब त्योहारों के समय घर आते हैं। मेलों व धार्मिक उत्सवों में विकृति आने की वजह से प्रवासी सदस्य इन अवसरों में घर न आकर जब अवकाश मिलता है तब घर आते हैं। ५६.९ प्रतिशत सदस्य हमारे अध्ययन में इस प्रकार के पाये गये। प्रवासी के मूल निवास स्थान में बच्चों, वृद्धों व महिला सदस्यों के रहने के कारण फसल के समय इन लोगों पर कार्य का बोझ बढ़ जाता है इसलिए इस प्रकार की समस्या वाले प्रवासी सदस्य फसल के समय घर आते हैं। हमारे अध्ययन में ४०.२ प्रतिशत सदस्य फसल के समय घर आते हैं।

तालिका संख्या -४

प्रवासी सदस्यों के घर आने का समय

भूमि जोत	फसल के समय	त्योहार के समय	जब अवकाश मिलता है	कुल
१.० एकड़ से कम	१२ (२४.०)	२ (४.०)	३६ (७२.०)	५० (१००.०)
१.०-२.५	१८ (५१.४)	-	१७ (४८.६)	३५ (१००.०)
२.५-५.०	९ (६४.३)	१ (७.१)	४ (२८.६)	१४ (१००.०)
५.० +	२ (६६.७)	-	१ (३३.३)	३ (१००.०)
कुल	४१ (४०.२)	३ (२.९)	५८ (५६.९)	१०२ (१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं ।

कृषि कार्यों के लिए प्रवासी सदस्य के घर आने का समय

पर्वतीय क्षेत्र के नैनीताल व देहरादून के मैदानी भागों को छोड़कर धानों की मड़ाई खेतों में की जाती है जो कि पैरों से की जाती है तथा मडुवा व गेहूं की मड़ाई खलिहान में की जाती है। मडुवा व गेहूं की कुछ जगहों पर लकड़ी से चुटाई की जाती है तथा कुछ जगहों पर दांय चलाकर मड़ाई की जाती है। जो कि काफी शारीरिक श्रम वाला होता है। इसके साथ-साथ खेतों से घरों व खलिहान तक अनाज लाने में कठिन मानव श्रम की आवश्यकता होती है इसलिए अधिकतर प्रवासी फसल की कटाई व मड़ाई के समय घर आते हैं। चयनित परिवारों के ४६.३ प्रतिशत प्रवासी कटाई व मड़ाई के समय घर आते हैं। जुताई व बुवाई में सिर्फ रोपाई लगाना कठिन होता है जो प्रति परिवार २-३ दिन से ज्यादा दिनों का काम नहीं होता है इसलिए जुताई व बुवाई के समय मात्र १४.६ प्रतिशत प्रवासी सदस्य घर आते हैं। घर में मात्र बच्चे व स्त्री सदस्य के होने के कारण ३९.१ प्रतिशत सदस्य दोनों अवसरों पर घर आते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि लघु आकार जोत के ७७.८ प्रतिशत व मध्यम जोत के कृषक परिवारों के शत प्रतिशत सदस्य दोनों अवसरों पर घर आते हैं।

तालिका संख्या -५

कृषि कार्यो के लिए प्रवासी सदस्यों के घर आने का समय

भूमि जोत आकार	खेतों की जुताई व बुवाई के समय	कटाई मड़ाई के समय	दोनों अवसरों पर	कुल
१.० एकड़ से कम	२ (१६.७)	८ (६६.६)	२ (१६.७)	१२ (१००.०)
१.०-२.५	३ (१६.७)	१० (५५.६)	५ (२७.७)	१८ (१००.०)
२.५-५.०	१ (११.१)	१ (११.१)	७ (७७.८)	९ (१००.०)
५.० +	-	-	२ (१००.०)	२ (१००.०)
कुल	६ (१४.६)	१९ (४६.३)	१६ (३९.१)	४१ (१००.०)

टिप्पणी : तालिका संख्या ५ में कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दशति हैं।

प्रवासी सदस्य के घर में ठहरने का समय

कितनी बार प्रवासी सदस्य घर आता है ? तथा कितने दिन घर में ठहरता है इस सम्बन्ध में कनैत (१९७९) लिखते है कि साधारणतया एक वर्ष में प्रवासी सदस्य ६० दिन के वार्षिक अवकाश में रहता है यह इसलिये सम्भव होता है कि अधिकतर प्रवासी सेना में होते हैं जिनको दो माह का वार्षिक अवकाश प्रदान किया जाता है। प्रवास के स्थान की दूरी व काम की प्रवृति पर प्रवासी के घर जाने व ठहरने पर प्रभाव पड़ता है। हमारे अध्ययन में भी ४०.२ प्रतिशत प्रवासी सेना व अर्द्धसैनिक बलों में कार्यरत हैं । जो देश के सुदूर क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इसलिए ये लोग वर्ष में ६० दिन के अवकाश में आते हैं इसके साथ ही साथ जो प्रवासी नजदीकी शहरों में कार्यरत हैं १४ दिन के आकस्मिक अवकाश में भी आते हैं। हमारे अध्ययन में ६४.७ प्रतिशत प्रवासी ६० दिन तक के अवकाश में आते हैं जबकि स्वरोजगार व असंगठित क्षेत्र में लगे प्रवासी एक माह से कम समय के लिए अपने मूल निवास स्थान में रह पाते हैं। जिनकी संख्या २९.४ प्रतिशत है। वार्षिक अवकाश के साथ-साथ आकस्मिक अवकाश में आने वाले प्रवासी तथा विद्यार्थी ६० दिन से अधिक समय तक अपने मूल निवास स्थान में रहते हैं। तालिका संख्या ६ से यह भी ज्ञात होता है कि मध्यम जोत के ६६.७ प्रतिशत प्रवासी सदस्य दो माह से अधिक समय तक अपने मूल निवास स्थान में रहते हैं जबकि सीमान्त जोत के ४.७ प्रतिशत प्रवासी सदस्य दो माह से अधिक समय के लिए अपने मूल निवास स्थान में रहते हैं।

तालिका संख्या – ६

वर्ष में प्रवासी सदस्य के घर रहने का समय

भूमि जोत	३० दिन से कम	३०-६० दिन	६० दिन से अधिक	कुल
१.० एकड़ से कम	१५ (३०.०)	३४ (६८.०)	१ (२.०)	५० (१००.०)
१.०-२.५	१३ (३७.१)	१९ (५४.३)	३ (८.६)	३५ (१००.०)
२.५-५.०	२ (१४.३)	१२ (८५.७)	-	१४ (१००.०)
५.० +	-	१ (३३.३)	२ (६६.७)	३ (१००.०)
कुल	३० (२९.४)	६६ (६४.७)	६ (५.९)	१०२ (१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

प्रवास का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव

छठी पंचवर्षीय योजना (१९८०-८५) के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों से नवयुवकों की अनुपस्थिति का परिणाम जनसंख्या में अन्य वर्गों जैसे स्त्रियों, बच्चों और वृद्धों की संख्या में वृद्धि होना है। इस तरह प्रवास एक तरफ जनसंख्या ह्रास प्रदर्शित करता है तो दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यकुशलता, शिक्षा व उद्यमियों की कमी करता है।

कनैल (१९७९) ने भी लिखा है कि बहुत से अध्ययनों में यह पाया गया है कि नवयुवकों के प्रवास करने से कृषि कार्यों का भार स्त्रियों पर पड़ता है और घरेलू कार्यों का बोझ बच्चों व वृद्धों पर पड़ता है। हमारे प्रतिदर्श प्रवासी परिवारों में भी इसी तरह का प्रभाव पाया गया है। प्रतिदर्श के ७८.४ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्त्रियों के कार्य में वृद्धि की शिकायत, तथा १३.८ प्रतिशत स्त्रियों ने बताया कि सामाजिक व भौगोलिक परिस्थितियों से सामान्जस्य कायम कर लेने के कारण परिवार के सदस्य के प्रवास करने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि ४.९ प्रतिशत प्रवासी परिवार की स्त्रियों ने अकेलेपन व अत्यधिक काम के बोझ के कारण मानसिक तनाव की शिकायत की। परिवार के छोटे बच्चों की देख-रेख, पशुओं को चराना तथा घर की रखवाली के लिए प्रवासी परिवार की २.० प्रतिशत स्त्रियाँ लड़कियों को विद्यालय नहीं भेज पाती हैं मात्र ०.९ प्रतिशत स्त्रियों ने बच्चों व वृद्धों पर काम के बोझ में वृद्धि की शिकायत की।

तालिका संख्या - ७

परिवार के सदस्यों के प्रवास का पारिवारिक जीवन पर प्रभाव

भूमि जोत आकार	स्त्री सदस्य पर काम का बोझ	बच्चों व वृद्धों पर काम का बोझ	लड़कियों को विद्यालय न भेजना	मानसिक तनाव	कोई प्रभाव नहीं	कुल
१.० से कम	४८ (८०.०)	-	-	२ (४.०)	८ (१६.०)	५० (१००.०)
१.०-२.५	२८ (८०.०)	१ (२.९)	२ (५.७)	१ (२.९)	३ (८.५)	३५ (१००.०)
२.५-५.०	१० (७१.४)	-	-	१ (७.१)	३ (२१.५)	१४ (१००.०)
५.० +	२ (६६.७)	-	-	१ (३३.३)	-	३ (१००.०)
कुल	८० (७८.४)	१ (०.९)	२ (२.०)	५ (४.९)	१४ (१३.८)	१०२ (१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

परिवार के सदस्य के प्रवास करने पर कृषि पर प्रभाव

मीराकेल (१९७०) ने लिखा है कि साधारणतया यह सोचा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास करने पर कृषि क्षेत्र में तकनीकी विकास को प्रोत्साहन मिलेगा क्योंकि श्रमिकों की न्यूनता की भरपाई नयी तकनीक से की जा सकेगी जिसके लिए प्रवासी द्वारा धन प्रेषण किया जाता है। साथ ही जब प्रवासी सदस्य अपने प्रवास स्थान से वापस लौटता है तो अपने साथ धन, ज्ञान व अनुभव को लाता है जो कृषि क्षेत्र में वैकल्पिक उत्पादन तकनीक का प्रयोग कर उत्पादकता में वृद्धि करते हैं। यद्यपि प्रवासी सदस्य के अवकाश प्राप्त करने के बाद कृषि में सहयोग की अपेक्षा की जा सकती है लेकिन जब परिवार का सदस्य सुदूर क्षेत्रों में सेवारत हो तो कृषि क्षेत्र प्रभावित होता है। जहां एक ओर पुरूष सदस्य के प्रवास करने से घरेलू कार्यों का बोझ स्त्रियों पर पड़ता है वहीं कृषि कार्यों की भी पूरी जिम्मेदारी स्त्री सदस्यों पर होती है। पुरूष सदस्य के प्रवास करने से ४३.९ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कृषि की देख-रेख की समस्या बतायी जो कि स्वाभाविक है क्योंकि एक तरफ जोत का आकार बहुत छोटा है तो दूसरी तरफ खेत काफी दूर-दूर फैलें हैं। प्रवासी सदस्यों के स्त्री सदस्यों के अकेले पड़ने के कारण बन्दरों, लंगूरों, शाही व अन्य पशु पक्षियों से फसल की रक्षा करना बड़ा मुश्किल होता है। जहां फसलों की रक्षा की समस्या आती वहीं दूसरी तरफ

संजायत की सिविल भूमि पर अवैध कब्जा या सिविल भूमि को वन पंचायत के अधीन करने, चारागाहों का अभाव व पनघट की समस्या के कारण ३६.८ प्रतिशत स्त्रियों ने पशुपालन कम होने व बन्द होने की सूचना दी। साधारणतया प्रवासी परिवार में पुरूष सदस्य के न होने पर खेती के लिए हलिया रखा जाता है जो कि एक ही परिवार का न होकर कई परिवारों का हल चलाता है। साधारणतया यह देखा जाता है कि हलिया बारी-बारी से विधवाओं, ब्राहमण व प्रवासी परिवार की स्त्रियों का हल चलाते हैं। समय के अभाव में ठीक समय पर इन परिवारों की जुताई व बुवाई समय पर नहीं कर पाता। समय पर जुताई व बुवाई न होने से उत्पादकता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। कम आय के प्रवासी सदस्य की स्त्रियां अधिक मजदूरी देने पर भी समय पर बुआई नहीं करवा पाती हैं। इसके साथ-साथ जिस परिवार के पास बैल नहीं होते और पुरूष सदस्य ने प्रवास किया होता है तो उस परिवार की स्त्री सदस्य को बैलों के बदले अपने श्रम का विनिमय करना पड़ता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रवासी द्वारा भेजे गये धनादेश के कारण मजदूर भी अच्छी मजदूरी देने, खाद बीज व खेती के औजार खरीदने की सामर्थ्य होने के कारण ३.५ प्रतिशत स्त्रियों ने खेती में प्रवास का अच्छा प्रभाव पड़ने की बात की है। अध्ययन में ९.६ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि परिवार के सदस्य के प्रवास करने पर खेती में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस वर्ग में मुख्यतया ब्राहमण प्रवासी व विद्यार्थी आते हैं। मात्र ०.९ प्रतिशत पूरी जमीन में खेती न हो पाने व १.८ प्रतिशत प्रवासी परिवार की स्त्रियाँ कृषि उत्पादन के साधान को जुटाने की समस्या बताती हैं। भूमि जोत के आधार पर देखा जाय तो मध्यम जोत के ६६.७ प्रतिशत प्रवासी परिवार की स्त्रियां कृषि देख-रेख की समस्या बताती हैं तो लघु जोत वाली स्त्रियों का प्रतिशत उपरोक्त समस्या में ३३.३ प्रतिशत है। सीमान्त जोत की ६.८ प्रतिशत स्त्रियां कृषि पर अच्छे प्रभाव को बताती हैं। कुल मिलाकर छोटे कृषकों पर प्रवास का अधिक प्रभाव पड़ता है जबकि बड़े कृषक मजदूर लगाकर भी प्रवासी सदस्यों की भरपाई कर सकते हैं।

तालिका संख्या - ८

परिवार के सदस्य के प्रवास करने पर कृषि पर प्रभाव

भूमि जोत आकार (एकड़ में)	पूरी जमीन में खेती न होना	कृषि उत्पादन साधन जुटाने की समस्या	कृषि देख रेख की समस्या	पशुपालन कम/बन्द होना	मजदूर न मिलना	कृषि पर अच्छा प्रभाव	कोई प्रभाव नहीं	कुल
१.० से कम	-	१ (१.७)	२२ (३७.३)	२० (३३.९)	३ (५.१)	४ (६.८)	९ (१५.२)	५९ (१००.०)
१.०-२.५	१ (२.७)	१ (२.७)	२१ (५६.८)	१२ (३२.४)	१ (२.७)	-	१ (२.७)	३७ (१००.०)
२.५-५.०	-	-	५ (३३.३)	९ (६०.०)	-	-	१ (६.६७)	१५ (१००.०)
५.० +	-	-	२ (६६.७)	१ (३३.३)	-	-	-	३ (१००.०)

कुल	१	२	५०	४२	४	४	११	११४
	(०.९)	(१.८)	(४३.९)	(३६.८)	(३.५)	(३.५)	(९.६)	(१००.०)

टिप्पणी : कोष्ठक में दिये गये अंक प्रतिशत को दर्शाते हैं।

प्रवास का उत्पादन का प्रभाव

कनैल (१९७९) ने लिखा है कि साधारणतया यह देखा गया है कि यदि सीमान्त जोत आकार के प्रवासी का कृषि उत्पादन में योगदान कम है तो उसकी जगह परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा व मजदूर लगाकर इस कमी को दूर किया जा सकता है साथ ही यदि फसल के समय प्रवासी घर पहुंच जाता है तो तब भी उत्पादन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है लेकिन फसल के व्यस्त समय में यदि प्रवासी घर नहीं आ पाता है तो मजदूरों की कमी, व उत्पादन का ठीक प्रबन्ध न होने से उत्पादन प्रभावित होता है। तालिका संख्या ९ से ज्ञात होता है कि ७२.६ प्रतिशत प्रवासी परिवार की स्त्रियों ने उत्पादन में १० प्रतिशत तक की कमी बताया तथा ९.५ प्रतिशत स्त्रियों ने १० से २५ प्रतिशत तक कमी की शिकायत की। १७.९ प्रतिशत स्त्रियों ने उत्पादन में कोई असर न पड़ने की सूचना दी। भूमि जोत के आधार पर देखने पर मध्यम जोत के शत प्रतिशत स्त्रियों ने उत्पादन में १० प्रतिशत की कमी तथा लघु कृषक परिवार की ९०.९ प्रतिशत स्त्रियों ने उत्पादन में १० प्रतिशत की कमी बताया जबकि सीमान्त जोत की लगभग ११.० प्रतिशत स्त्रियों ने १० से २५ प्रतिशत तक उत्पादन में कमी की सूचना दी।

तालिका संख्या ९

परिवार के सदस्यों के प्रवास करने पर कृषि उत्पादन में कमी

भूमि जोत आकार	१० प्रतिशत कमी	१.०-२.५ प्रतिशत कमी	कोई कमी नहीं	कुल
१.० एकड़ से कम	२९ (६५.९)	२ (४.६)	१३ (२९.५)	४४ (१००.०)
१.०-२.५	२० (७४.१)	६ (२२.२)	१ (३.७)	२७ (१००.०)
२.५-५.०	१० (९०.९)	-	१ (९.१)	११ (१००.०)
५.० +	२ (१००.०)	-	-	२ (१००.०)
कुल	६१ (७२.६)	८ (९.५)	१५ (१७.९)	८४ (१००.०)

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का अभाव होने के कारण पुरूष वर्ग द्वारा देश के अन्य भागों में प्रवास किया जाता है, इसके साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक अवस्थापनाओं की कमी, पेयजल समस्या, विद्युत समस्या, चारा व ईधन जमा करने की समस्या, निम्न आर्थिक स्तर, शहरी चमक दमक की ओर आकर्षण तथा खाद्यानों की आपूर्ति ठीक से न हो पाने के कारण पर्वतीय क्षेत्र के नवयुवक प्रवास करने को विवश हैं। परिवार के पुरूष सदस्य द्वारा प्रवास करने के कारण कृषि का ज्यादातर भार स्त्रियों पर व अन्य सामाजिक कार्यों का भार वृद्धों व बच्चों पर आ जाता है। जहां एक ओर पुरूष वर्ग के प्रवास करने पर स्त्रियों के काम के बोझ में वृद्धि होती है और वे अपनी लड़कियों को विद्यालय भेजने में असमर्थ रहती हैं वहीं दूसरी ओर स्त्रियां मानसिक तनाव से भी ग्रस्त रहती हैं। परिवार के सदस्य के प्रवास करनेसे सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ-साथ कृषि की देख-रेख न कर पाना, पशु पालन बन्द व कम होना तथा पूरी जमीन में कृषि न कर पाने से कृषि उत्पादकता भी प्रभावित होती है।

संदर्भ सूची

१. पन्त, एस०डी० (१९३५) सोशल इकानामी ऑफ द हिमालयाज, जार्ज ऐलन एण्ड अनविन, लन्दन ।

२. शाह, एस० एल० (१९८०) प्लानिंग एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ नेचुरल एण्ड ह्यूमन रिसोर्सेज इन द माउन्टेक्स, यतन पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली ।

2830H

३. सिंह, आर० डी (१९७७) लेबर माइग्रेशन एण्ड इट्स इम्पैक्ट आन इम्प्लायमेन्ट एण्ड इन्कम इन ए स्माल फार्म इकानामी, इन्टरनेशनल लेबर रिव्यू, वाल्यूम ११६, नं० ७

४. येन. जे० वी० एण्ड गर्डन जे० एफ० (१९७१) पापुलेशन प्राब्लम इन द रूरल पंजाब, हारवर्ड यूतिवर्सिटी प्रेस, १९७१

५. खन्का , एस० एस० (१९८८) लेबर फोर्स इम्प्लायमेन्ट एण्ड अनइम्प्लायमेन्ट इन ए बैकवर्ड इकानामी, हिमालियन पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली।

६. कनैल, जे०(१९७९) माइग्रेशन फ्राम रूरल एरियाज, द एबिडेन्स ऑफ विलेज स्ट्डीज, आवसफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।

७. बसेड़ा, एम० एस० (१९९२) भूतपूर्व सैनिकों की समस्याऐं तथा उनका निदान, उत्तरांचल, उत्तराखंड शोध संस्थान, लखनऊ।

८. मीराकेल, एम० पी० एण्ड वेरी, एस० एस० (१९७०) माइग्रेन्ट लेबर, एण्ड इकानामिक डेबलपमेन्ट, आक्सफोर्ड इक्नामिक प्रेस, वाल्यूम २६

९. डिमरी अनिल कुमार (१९९४) इम्पैक्ट ऑफ मेल माइग्रेशन ऑन वूमन, ए स्टडी ऑफ गढ़वाल हिमालयन रीजन, द एडमिनिस्ट्रेशन, वाल्यूम ३९, जुलाई-सितम्बर।

१०. मेहता जी० एस० (१९९१) करैक्टरिस्टिक्स एण्ड इकॉनामिक इम्लीकेशन्स ऑफ माइग्रेशन, जौरनल ऑफ रूरल डेवलपमेंट वाल्यूम १०, एन० आई० आर० डी० हैदराबाद।